भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास
(F- 5)

[इकाई-1 भाषा की प्रकृति]

* भाषा का अर्थ

भाषा एक माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को एक दूसरे से व्यक्त कर सकते है। एक मनुष्य ही है जो भाषा का प्रयोग करता है। यह (भाषा) मानवीय कालाकृति है। भाषा का उत्पत्ति मनमाने रूप में किया गया है, इसका कोई प्राकृतिक संबंध नही होता है। एक ही वस्तु को अलग- अलग भाषाओं में अलग - अलग नाम से जाना जाता है। जैसे इंग्लिश में Book और हिन्दी में किताब कहते है। हर एक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। जिस माध्यम में उस भाषा को लिखा जाता है। हिन्दी देवनागरी लिपि और अंग्रेजी रोमन लिपि मे लिखी जाती है।

भाषा का परिभाषा

भाषा एक सांकेतिक साधन है - बाबूराम सक्सेना

ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का स्पष्टीकरण ही भाषा है - स्वीट

Scanned by CamScanner

⇒ भाषा की प्रकृति

i) भाषा अर्जनीय है - बच्चे भाषा सीखकर जन्म नही लेते है बल्कि वो जिस भाषा-भाषियों के बीच जन्म लेते है। उसी भाषा को सुनकर सीख जाते है।

ii) भाषा सामाजिक प्रक्रिया है - भाषा मानव मस्तिष्क का ~~अप्र~~ उपज है। यह प्राकृतिक नही है। इसे समाज के द्वारा बनाया गया है और समाज में ही इसका प्रयोग किया जाता है।

iii) भाषा अनुकरणजन्य प्रक्रिया है - भाषा अनुकरण द्वारा सीखा जाता है। बच्चे माता-पिता, भाई बहन द्वारा बोली गई बातों को सुनकर बोलने का प्रयास करते है।

iv) भाषा परिवर्तनशील होता है - भाषाई परिवर्तन ध्वनियों, शब्दों, पद्बंधों एवं वाक्य-रचना किसी भी स्तर पर हो सकता है।

v) भाषा का कोई अंतिम रूप नही होता है - भाषा विकासात्मक होता है। इसमें सदैव विकास होते रहता है। भाषा में कुछ वर्णों के लिखावट में बदलाव लाए जाते है। समय के साथ कुछ नए शब्द जोड़े और हटाए जाते है। भाषा बोलने में भी परिवर्तन लाया जाता है।

Scanned by CamScanner

Page No.
Date

⇒ भाषा के रूप -
i) उच्चारित रूप ii) लिखित भाषा

* भाषा :- प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में
- समझ के माध्यम के रूप में
- संप्रेषण के माध्यम के रूप में

भाषा प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था है। किसी चीज को उसके नाम से पुकारने के लिए ध्वनि प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। जैसे हम पेड़ को पेड़ कहते है तो इस माध्यम से हम दूसरों को बताते है कि वह पेड़ है। एक भाषा मे एक वस्तु का एक नाम रखा जाता है। इस तरह से यह व्यवस्थित है। भाषा के द्वारा समझ भी विकसित होता है। इससे हम आस-पास की वस्तुओं को जान पाते है। उसकी समझ हम में विकसित होता है।

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है। इसके द्वारा एक व्यक्ति अपने विचारों, भावों को दूसरे से अभिव्यक्त कर पाता है। अपने विचारों को बताने के लिए किसी को छूना भी नही पड़ता है। एक बोलता है तो दूसरा सुन के समझ लेता है। इस तरह हम किसी भी मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से अपनी बात को कह पाते है। इससे बोलने वाले तथा सुनने वाले दोनों का समझ विकसित होता है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

* मानव भाषा और पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों की भाषा में अंतर

भाषा एक माध्यम है जिसके द्वारा कोई संवाद कर सकता है। इसके बिना कोई अपने विचारों को व्यक्त नही कर सकता है। भाषा के बिना कोई इस जगत को नही समझ सकता है। मानव भाषा व्याकरणबद्ध एवं नियमबद्ध होते है। इसमें वर्णों, अक्षरों, प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। मानव भाषा की इस खासियत के वजह से अंग्रेजी बोलने वाले हिन्दी और हिन्दी बोलने वाले इंग्लिश सीख सकते है। किंतु पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों की भाषा नियमबद्ध नही होते है। उसमें कोई व्यकरण भी नही होता है। अत: शेर का बच्ची नही सीख सकती है। इनका भाषा व्यक्तिगत होता है। शेर दहाड़ सकता है, बिल्ली म्यू-म्यू कर सकती है। सब अपना-अपना भाषा खूद ही प्रयोग कर सकते है।

* भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था: ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, प्रोक्ति (संवाद) संरचना

i) ध्वनि संरचना - प्रत्येक भाषा में ध्वनियों का वर्गीकरण मिलता है। हिन्दी में स्वर और व्यंजन दो वर्ग होते है। अंग्रेजी में Vowel और Consonant नाम से ध्वनि के दो वर्ग मिलते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

अलग-अलग भाषाओं में स्वरों और व्यंजनों की संख्या भिन्न होती है लेकिन संसार के हर भाषा में स्वर तथा व्यंजन होते है। शब्द में हर सार्थक ध्वनि का ~~हो~~ महत्व होता है। जिन ध्वनियों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ बदल जाते है, वे सार्थक ध्वनियाँ कहलाती है।

उदाहरण –	अंग्रेजी	Hill	HEEL
	हिन्दी	हिल	हील

प्रत्येक भाषा के शब्द में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों की व्यवस्था नियमबद्ध है। यदि स्वर के लिए (V) तथा व्यंजन के लिए (C) संकेत माने तो यह व्यवस्था (CVCV) की होती है। अर्थात दो व्यंजन ध्वनियों के बीच एक स्वर ध्वनि आती है।
जैसे - कब → क्+अ+ब्+अ

ii) शब्द संरचना – हर भाषा में शब्दों के भेद होते है। साथ ही हर भाषा में नये-नये शब्द निर्माण के ~~साथ~~ खास प्रक्रिया होती है। उदाहरण के लिए हिन्दी में शब्दों को संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, लिंग, वचन आदि कोटियों में वर्गीकृत किया जाता है। इसी प्रकार अंग्रेजी में शब्दों को Noun, Pronoun, Verb, Adverb, Adjective, Gender आदि कोटि में रखा जा सकता है। ऐसी कोटियाँ संसार के सभी भाषाओं में होती है। इस आधार पर समस्त भाषाओं में एकरूपता पाई जाती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

संसार के सभी भाषाओं में शब्दों का रूपांतरण होता है। उदाहरण के लिए संज्ञा शब्दों का विशेषण में रूपांतरण सभी भाषा में पाया जाता है। प्रत्येक भाषा के रूपांतरण की अपने नियम है।

भाषा	संज्ञा	विशेषण
अंग्रेजी	Rain / sun	Rainy / Sunny
हिन्दी	रंग / खर्च	रंगीला / खर्चीला

iii) वाक्य संरचना – किसी भी भाषा के वाक्य में उपस्थित बुनियादि घटक जैसे- कर्ता, कर्म और क्रिया की व्यवस्था से किसी वाक्य की संरचना बनती है। इन घटकों से किसी निश्चित क्रम में होने पर ही वाक्य की रचना होती है।

उदाहरण -

वाक्य i) इकबाल आम खाता है।

ii) आम इकबाल खाता है।

iii) खाता इकबाल आम है।

iv) संवाद संरचना – किन्ही भी दो व्यक्तियों के बीच संवाद को संभव बनाने के कुछ नियम होते है। यह संभव है कि दो व्यक्तियों द्वारा कही गई बाते ध्वनि, शब्द तथा वाक्य के स्तर पर उपर्युक्त हो। लेकिन ये बातें संवाद के स्तर पर अर्थहीन हो। उदाहरण -

Scanned by CamScanner

पहला व्यक्ति - कहो भाई क्या हाल है।
दूसरा व्यक्ति - सहजी चल रहा है।
पहला व्यक्ति - काम धंधा कैसा चल रहा है।
दूसरा व्यक्ति - टमाटर २० रु० किलो है।

भाषा की विशेषताएँ

i) भाषा अर्जित संपत्ति है।
ii) भाषा सामाजिक वस्तु है।
iii) निश्चित से अनन्त की रचना है।
iv) भाषा नियमबद्ध होती है।
v) यह सब व्याकरणबद्ध होती है।
vi) यह ध्वनि प्रतीकों का समूह है।
vii) भाषा अनुकरणीय होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner